क्षेत्रीय मार्गदर्शिका

THE MENTORING PROJECT

साहसी स्त्रियाँ: सबसे कठिन जगहों से लोगों को बचाना

RACHELLE STARR

साहसी स्त्रियाँ:
सबसे कठिन जगहों से
लोगों को बचाना

RACHELLE STARR

(रेचेल स्टार)

विषय-वस्तु

परिचय...4

भाग I: हमें क्यों अन्धकार से सामना करना चाहिए 7

भाग II: भय पर विजय पाना और आत्मा-प्रेरित जोखिम उठाना... 10

भाग III: दु:खी और खोए हुए लोगों तक पहुँचने के व्यावहारिक तरीके.. 16

भाग IV: पत्नियों और माताओं के रूप में एक अनन्त दृष्टिकोण को बनाए रखना 24

निष्कर्ष... 30

परिचय

यह स्कारलेट होप में एक सामान्य गुरुवार की रात थी, हमारी सेवकाई वयस्क मनोरंजन उद्योग में कार्यरत महिलाओं तक पहुँचने के लिए समर्पित है। जैसे ही हमारी टीम घर का बना भोजन लिए हुए स्ट्रिप क्लब में पहुँची, वातावरण में धुएँ और निराशा की जानी-पहचानी धुंध भारी होकर छाई हुई थी। मुझे यह बिल्कुल भी ज्ञात न था कि परमेश्वर सामर्थ्य से कार्य करने वाला था, और वह एक बार फिर मुझे यह स्मरण दिलाने वाला था कि वह हमें हमारे आरामदायक क्षेत्रों से बाहर क्यों बुलाता है और अन्धकार के मध्य में क्यों भेजता है।

जब मैं गरम भोजन की थालियाँ परोस रही थी, एक युवती लड़खड़ाते कदमों से भीतर आई, वह स्पष्ट रूप से नशे में थी और एक थैला पकड़े हुई थी। उसने आँसुओं के साथ अपनी कहानी को बताया — वह अपने घर पर भूखे बैठे पाँच बच्चों के लिए भोजन जुटाने के लिए व्याकुल थी। क्लब प्रबंधक ने उससे कहा था कि उसे नग्न होकर नृत्य करके ऑडिशन देना होगा, इसलिए उसने साहस जुटाने के लिए शराब पी हुई थी। उसी क्षण मेरा हृदय उसके लिए टूट गया, और मैंने पवित्र आत्मा की प्रेरणा को महसूस किया कि मुझे उससे कुछ कहना है।

“यीशु आप से प्रेम करता है,” मैंने धीरे से कहा, “और उसने हमें यहाँ भेजा है कि हम यह बात आपको बताएँ।”

ठीक वहीं, चमकीले प्रकाश की तेज़ चमक के नीचे, यह अनमोल स्त्री रो रही थी और मसीह को स्वीकार करने के लिए प्रार्थना कर रही थी। जब उसने मुझे बताया कि उसका नाम स्कारलेट है, तो मैं परमेश्वर के उद्धार कार्य को अपनी आँखों के सामने होते देख चकित हुए बिना नहीं रह सकी।

यह मुलाकात इस बात का सार प्रस्तुत करती है कि क्यों परमेश्वर हमें मसीही स्त्रियों के रूप में अपनी कलीसिया की सुरक्षित दीवारों से बाहर कदम बढ़ाने के लिए बुलाता है। वह चाहता है कि हम इस दुःखी संसार में उसके हाथ और पैर बनें, और साहसपूर्वक उसकी ज्योति लेकर अन्धकार का सामना करें।

मैं जानती हूँ कि यह कभी-कभी कठिन लग सकता है, खासकर जब आप परिवार के दायित्व, करियर, और दैनिक ज़िम्मेदारियों की माँगों को पूरा करने में व्यस्त हों। यह प्रलोभन होता है कि हम अपने विश्वास को

केवल आरामदायक, परिचित स्थानों तक सीमित रखें। किन्तु यीशु सेवकाई की जटिलताओं से नहीं कतराता था, और न ही हमें ऐसा करना चाहिए। उसने कोढ़ियों को छुआ, व्यभिचारिणी स्त्रियों का बचाव किया, और पापियों के साथ भोजन किया। वह लगातार समाज के उपेक्षित लोगों तक अपने प्रेम को पहुँचाने के लिए विशेष प्रयास करता रहा।

उसके अनुयायी होने के नाते, हमें भी ऐसा ही करने के लिए बुलाया गया है। चाहे वह स्ट्रिप क्लब में जाना हो, बेघरों के आश्रय में सेवा करना हो, कैदियों से मिलना हो, या पड़ोसी के साथ सुसमाचार साझा करना हो, परमेश्वर आपको अनन्तकाल पर प्रभाव डालने के लिए उपयोग करना चाहता है। भले ही आप स्वयं को सक्षम न समझें या यह तय न कर पाएँ कि कहाँ से आरम्भ करें, वह आपके इच्छुक हृदय के माध्यम से काम कर सकता है।

मैं 17 वर्षों से अधिक समय से इस क्रांतिकारी विश्वास की यात्रा पर हूँ, जब परमेश्वर ने मुझे पहली बार मेरी 20 वर्ष की उम्र में सेक्स उद्योग में कार्यरत स्त्रियों के मध्य सेवकाई के लिए बुलाया था। मैं आपको बता दूँ, परमेश्वर पर भरोसा करना और उसे काम करते देखने की यह यात्रा अजीब, भयावह और रोमांचक रही है। उस पहली "हाँ" से लेकर एक स्ट्रिप क्लब में घर का बना खाना लाने तक, और अब देश भर की स्त्रियों तक पहुँचने वाली एक फलती-फूलती सेवकाई की अगुवाई करने तक, हर कदम विश्वास की यात्रा रही है।

किन्तु यह सब एक आज्ञाकारिता के एक कदम से आरम्भ हुआ — अपने आरामदायक दायरे से बाहर निकलकर अज्ञात में परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए उपलब्ध और तत्पर रहना। इस मार्गदर्शिका के माध्यम से मैं आपको यही चुनौती देना और सशक्त बनाने का प्रयास करना चाहती हूँ। मैं आपको प्रेरित करना चाहती हूँ कि आप सुसमाचार और परमेश्वर की महिमा के लिए अन्धकार का सामना करने में भाग लें।

आगे के अनुभागों में, हम इन विषयों का अध्ययन करेंगे:

- क्यों मसीही होने के नाते अन्धकार का सामना करना हमारी बुलाहट है
- कैसे भय पर विजय पाएँ और आत्मा-प्रेरित जोखिम उठाएँ
- खोए हुए और दु:खी लोगों तक पहुँचने के व्यावहारिक तरीके
- व्यस्त पत्नियों और माताओं के रूप में अनन्त दृष्टिकोण बनाए रखना
- पवित्र आत्मा की सुरक्षा और मार्गदर्शन में चलना
- इस मिशन की तात्कालिकता और महत्व

मैं अपनी यात्रा की प्रेरणादायक कहानियाँ साझा करूँगी, रास्ते में सीखे गए व्यावहारिक सुझाव दूँगी, और सबसे महत्वपूर्ण, परमेश्वर के वचन की ओर पुनः आपका ध्यान आकर्षित करूँगी, जो हमारा अंतिम

मार्गदर्शक है। मेरी प्रार्थना है कि इस मार्गदर्शिका के अंत तक आप सशक्त और नवीन उत्साह के साथ प्रेरित हों, जिससे कि आप यीशु के लिए उस अंधेरे में कदम रखें जहाँ वह आपको भेज रहा है।

क्या आप इस यात्रा पर निकलने के लिए तैयार हैं? क्या आप परमेश्वर की बुलाहट को “हाँ” कहने के लिए तैयार हैं, भले ही इसका अर्थ आपके आराम क्षेत्र से बाहर निकलना हो? यह साहसिक यात्रा आपका इंतजार कर रही है, और आपकी आज्ञाकारिता का प्रभाव अनन्त तक गूंज सकता है। तो चलिए आरम्भ करते हैं!

1

हमें क्यों अन्धकार से सामना करना चाहिए

"ज्योति अन्धकार में चमकती है, और अन्धकार ने उसे ग्रहण न

किया।" - यूहन्ना 1:5

यूहन्ना के सुसमाचार का यह सामर्थी पद इस सच्चाई को संक्षेप में प्रस्तुत करता है कि क्यों हमें, विश्वासियों के रूप में, अपने संसार में अन्धकार के विरुद्ध सक्रिय रूप से खड़ा होना चाहिए। हमारे भीतर वह एकमात्र ज्योति है जो वास्तव में पाप, निराशा और टूटेपन की छाया पर जय प्राप्त कर सकती है। जब हम चारों ओर दृष्टि डालते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि अन्धकार व्याप्त है — गरीबी, हिंसा, लत, शोषण, रोग, टूटे हुए परिवार — यह सूची अंतहीन और निराशाजनक प्रतीत होती है।

फिर भी, इस पूरे टूटेपन के बीच आशा है। सुसमाचार है। यीशु है! वही है, जो "खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है" (लूका 19:10), जो "बन्दियों को छुड़ाने" आया (लूका 4:18), जो "खेदित मनवालों को चंगा करता है" (भजन संहिता 147:3), और जो हमारा परमेश्वर से मेलमिलाप कराता है (2 कुरिन्थियों 5:18)। यीशु स्वयं को "जगत की ज्योति" घोषित करता है (यूहन्ना 8:12), और यह अद्भुत बात है कि वह हमारे, अर्थात् अपनी कलीसिया के माध्यम से चमकने का चुनाव करता है।

प्रेरित पौलुस 2 कुरिन्थियों 4:6-7 में इस सत्य को सुंदरता से व्यक्त करता है:

> इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिसने कहा, "अन्धकार में से ज्योति चमके," और वही हमारे हृदयों में चमका कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो। परन्तु हमारे पास वह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है कि यह असीम सामर्थ्य हमारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर ही की ओर से ठहरे।

हम ही वे मिट्टी के बर्तन हैं, साधारण पात्र जिनके भीतर असाधारण ज्योति है।

वास्तव में, पहाड़ी उपदेश में यीशु ने हमसे कहा, “तुम जगत की ज्योति हो। जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता. . . उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने ऐसा चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें” (मत्ती 5:14-16)।

यह बुलाहट एक अत्यंत महान विशेषाधिकार है, और साथ ही एक गंभीर ज़िम्मेदारी भी है। हमारे पास उस मरते हुए संसार के लिए आवश्यक औषधि है — अर्थात् वह आशा जो सबसे घने अन्धकार को भी चीर सकती है। तो हम इसे केवल अपने तक कैसे रख सकते हैं?

लूका 10:25-37 में दिए गए दयालु सामरी के दृष्टांत पर विचार करें। यीशु यह कहानी इस प्रश्न के उत्तर में बताता है, “मेरा पड़ोसी कौन है?” याजक और लेवी के विपरीत, सामरी ने पीड़ित व्यक्ति की ज़रूरत को समझा और करुणा से उसकी सहायता की। वह सड़क के दूसरी ओर से नहीं गुज़रा। वह इसमें शामिल हुआ, भले ही उसे व्यक्तिगत मूल्य चुकाना पड़ा। यह दृष्टांत हमें चुनौती देता है कि हम अपने चारों ओर दु:खी लोगों को देखें और सामाजिक सीमाओं या व्यक्तिगत असुविधा की परवाह किए बिना, कार्य करें।

यदि हम वास्तव में परमेश्वर की आज्ञा में चलना चाहते हैं, तो अन्धकार का सामना करना कोई विकल्प नहीं है। यीशु ने स्पष्ट किया था कि उसका अनुसरण करना, हमें अक्सर असहज, यहाँ तक कि खतरनाक परिस्थितियों में भी ले जाएगा। उसने अपने चेलों से कहा, “यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो कि उसने तुम से पहले मुझ से बैर रखा” (यूहन्ना 15:18)। उसने उनसे कहा कि वे उसके नाम के कारण सताव, विरोध और परीक्षाओं का सामना करेंगे।

किन्तु इन गम्भीर सच्चाइयों के साथ-साथ यीशु ने अद्भुत प्रतिज्ञाएँ भी दीं। उसने हमें यह सुनिश्चित किया कि हममें उसका प्रकाश कभी नहीं बुझेगा (मत्ती 5:14)। उसने यह घोषणा की कि उसका सिद्ध प्रेम सारे भय को दूर कर देगा (1 यूहन्ना 4:18)। उसने विश्वास की ढाल दी है, “जिससे तुम उस दुष् ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको” (इफिसियों 6:16)।

जब हम वास्तव में यह समझ जाते हैं कि परमेश्वर की संतान होने के नाते हमारे पास क्या है, तो सब कुछ बदल जाता है। तब हमें डरकर पीछे हटने या सतही, आरामदायक विश्वास में सिमटने की आवश्यकता नहीं रहती है। हम पवित्र आत्मविश्वास के साथ यह जानते हुए आगे बढ़ सकते हैं कि वही आत्मा जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, हमारे भीतर वास करता है (रोमियों 8:11)।

चर्चा एवं मनन:

1. आपके समुदाय या व्यक्तिगत जीवन के किन अन्धकारमय क्षेत्रों में आपको ऐसा लगता है कि परमेश्वर आपको अपनी ज्योति के साथ जुड़ने के लिए बुला रहा है?

2. इस सच्चाई के साथ कि यीशु "जगत की ज्योति" है (यूहन्ना 8:12), यह आपके चारों ओर के टूटेपन और अन्धकार को देखने की आपकी दृष्टि को किस प्रकार प्रभावित करता है?

3. किस तरह से आप भय के कारण असुविधाजनक या जोखिम भरी परिस्थितियों में शामिल होने से हिचकिचाए हैं?

प्रार्थना

हे प्रभु, इस अद्भुत विशेषाधिकार के लिए धन्यवाद कि हम इस संसार के अन्धकार में यीशु की ज्योति लेकर चल सकें। हम आपके अटल प्रेम के लिए आपकी स्तुति करते हैं, और आपके पुत्र को भेजने के लिए धन्यवाद करते हैं जो खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने, खेदित मनवालों को चंगा करने, और बंदियों को छुड़ाने आया। हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमें विश्वास में आगे बढ़ने का साहस दें, भले ही इसका अर्थ कठिन और असुविधाजनक स्थानों में जाना हो। हमारी सहायता करो कि हम आपकी बुलाहट के प्रति आज्ञाकारी रहें, भय में पीछे हटने के स्थान पर उस आत्मा की सामर्थ्य में भरोसा करें, जो हमारे भीतर वास करता है। हमें, हे प्रभु, उज्जवल रीति से चमकने का सामर्थ्य दे, और हमें इस संसार में आशा, चंगाई, और मेल-मिलाप के पात्र बना। हमें आपकी महिमा और आपके राज्य की उन्नति के लिए उपयोग करो।

यीशु के नाम में, आमीन।

2

भय पर विजय पाना और आत्मा-प्रेरित जोखिम उठाना

"क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है।" - 2 तीमुथियुस 1:7

भय सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है, जो हमें अन्धकार का सामना करने से रोकता है। जब हमारा सामना किसी अज्ञात, असुविधाजनक या संभावित खतरनाक चीज़ से होता है, तो यह एक स्वाभाविक मानवीय प्रतिक्रिया होती है। किन्तु परमेश्वर की संतान होने के नाते, हमें भय में नहीं, बल्कि विश्वास में चलने के लिए बुलाया गया है। इस भाग में, हम जानेंगे कि कैसे अपने भय पर विजय पाएँ और राज्य के लिए आत्मा के मार्गदर्शन में जोखिम उठाएँ।

किन्तु अन्धकार का सामना करने में जो सबसे बड़ी बाधा हम अनुभव करते हैं, वह भय है।

भय के स्वभाव को समझना

इससे पहले कि हम यह जानें कि भय पर कैसे विजय पाएँ, यह समझना महत्वपूर्ण है कि भय क्या है और यह कहाँ से आता है। भय मूल रूप में एक परमेश्वर-प्रदत्त भावना है जो हमें वास्तविक खतरों से बचाने के लिए तैयार की गई है। किन्तु शत्रु अक्सर इस भावना को विकृत कर देता है, और इसका उपयोग इस प्रकार करता है कि हम लकवाग्रस्त के समान हो जाएँ और परमेश्वर की योजना को अपने जीवन में पूरा न कर सकें।

1 पतरस 5:8 में हमें चेतावनी दी गई है, "तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए।" ध्यान दें कि पतरस यह नहीं कहता कि शैतान एक गर्जनेवाले सिंह है, परन्तु वह सिंह के "समान" है। शत्रु स्वयं को वास्तविकता से बड़ा और अधिक खतरनाक दिखाने के लिए भय का प्रयोग करता है। वह चाहता है कि हम डरें, डर के मारे सिकुड़ जाएँ, भले ही कोई वास्तविक खतरा न हो।

इसके विपरीत, सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र में हम पाते हैं कि परमेश्वर बार-बार अपने लोगों से कहता है, "मत डर।" चाहे वह यहोशू हो जो इस्राएल को प्रतिज्ञा किए हुए देश में ले जाने की तैयारी कर रहा था (यहो. 1:9), या मरियम जिसे उसकी अलौकिक गर्भावस्था का समाचार मिला (लूका 1:30), परमेश्वर का सन्देश स्पष्ट है:

उसकी उपस्थिति में और उसकी आज्ञा के अधीन रहते हुए, हमें किसी भी बात से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है।

भय के साथ मेरी व्यक्तिगत यात्रा

मैं उस पल को कभी नहीं भूलूँगी, जब मैंने अपने पति जोश के साथ पहली बार साझा किया था कि मुझे लगा कि परमेश्वर मुझे स्ट्रिप क्लबों में सेवा करने के लिए बुला रहा है। हम नवविवाहित थे और साथ में जीवन का आरम्भ कर रहे थे। उसकी नई दुल्हन का ऐसी अंधेरी, संभावित रूप से खतरनाक जगहों पर जाने का विचार स्वाभाविक रूप से बेचैन करने वाला था।

किन्तु आप जानते हैं, उसने मुझसे क्या कहा? "राचेल, यही तो यीशु करता। और यदि यीशु तुम्हें वहाँ भेज रहा है, तो वह तुम्हारी रक्षा भी करेगा।" इन शब्दों के साथ, जोश इस रोमांचक यात्रा में मेरा सबसे बड़ा सहायक बन गया, जिस पर परमेश्वर ने हमें भेजा था। बार-बार हमने परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को देखा है कि कैसे उसने मुझे सुरक्षित रखा जब मैंने उसकी अगुवाई में कदम उठाए।

फिर भी, विशेषकर आरम्भ में, भय बिलकुल वास्तविक था। मुझे उद्योग के बारे में अपनी पहले से बनी सोच और पूर्वधारणाओं का सामना करना पड़ा। मुझे असुविधा को अपनाना सीखना पड़ा। मुझे अपने अहंकार को मरने देना पड़ा और इस बात के लिए तैयार रहना पड़ा कि मैं मूर्ख दिखूँ, गलत समझी जाऊँ, और यहाँ तक कि निंदा भी झेलूँ, केवल इसलिए कि मैं लोगों से वैसा प्रेम कर रही थी जैसा यीशु करता है।

इस यात्रा के माध्यम से, मैंने एक अत्यंत महत्वपूर्ण सत्य सीखा: साहस का अर्थ भय की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि भय के होते हुए भी परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना है। इसका अर्थ अपनी दृष्टि को "विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु" (इब्रानियों 12:2) की ओर लगाना है, और उसकी पीछे चलना, चाहे इसकी कोई भी कीमत क्यों न हो।

बुद्धि और भय के बीच का अंतर

इसका अर्थ यह नहीं कि हमें लापरवाही से काम लेना चाहिए या स्वयं को अनावश्यक खतरे में डाल देना चाहिए। जब हम टूटे हुए स्थानों और लोगों का सामना करते हैं, तब बुद्धि और विवेक अत्यंत आवश्यक होते हैं। नीतिवचन 22:3 हमें बताता है, "चतुर मनुष्य विपत्ति को आते देखकर छिप जाता है; परन्तु भोले लोग आगे बढ़कर दण्ड भोगते हैं।"

परमेश्वर की बुद्धि और भय-आधारित निर्णय लेने में एक महत्वपूर्ण अंतर है। बुद्धि परमेश्वर की अगुवाई माँगती है, संभावित जोखिमों पर विचार करती है, और विश्वास के साथ आगे बढ़ती है। दूसरी ओर, भय हमें लकवाग्रस्त कर देता है, और हम उस बात से पीछे हट जाते हैं जिसे करने के लिए परमेश्वर हमें बुला रहा है।

उदाहरण के लिए, जब हमने पहली बार स्ट्रिप क्लबों में अपनी सेवकाई आरम्भ की, तो हमने सुरक्षा के उपाय किए। हम हमेशा टीम में जाते थे, हम प्रार्थना करते थे, और स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित करते थे। यह भय में काम करना नहीं था; बल्कि यह हमारी बुलाहट में बुद्धि का उपयोग करना था।

आत्मा-प्रेरित जोखिम उठाना

आत्मा द्वारा अगुवाई पाना अक्सर जोखिम उठाने से जुड़ा हुआ होता है — अर्थात् अपने आरामदायक क्षेत्र से बाहर निकलना और अज्ञात क्षेत्र में प्रवेश करना। इसका अर्थ संसार की दृष्टि में मूर्ख दिखने की इच्छा रखना, और सुसमाचार के कारण सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध जाना होता है।

मत्ती 14 में पतरस के नाव से बाहर निकलने के बारे में सोचें। क्या यह जोखिमभरा था? बिल्कुल। क्या यह तर्क के विरुद्ध था? हाँ। किन्तु यह यीशु के निमंत्रण के उत्तर में था। पतरस की वह जोखिम उठाने की इच्छा एक अद्भुत विश्वास-निर्माण अनुभव में बदल गई।

सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र और कलीसिया के इतिहास में, हम ऐसे पुरुषों और स्त्रियों के अनगिनत उदाहरण देखते हैं जिन्होंने राज्य के लिए बड़े जोखिम उठाए:

- एस्तेर ने अपने लोगों को संहार से बचाने के लिए अपने प्राणों को जोखिम में डाल दिया, यह कहते हुए, "और यदि नष्ट हो गई तो हो गई" (एस्त. 4:16)।
- दानिय्येल ने राजा की आज्ञा के बावजूद यहोवा से खुलकर प्रार्थना करना जारी रखा, यह जानते हुए कि यह उसके प्राणों को खतरे में डाल सकता है (दानि. 6:10)।
- प्रेरितों ने तीव्र सताव का सामना करते हुए सुसमाचार का प्रचार किया, और कहा, "मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है" (प्रेरि. 5:29)।
- कोरी टेन बूम और उसके परिवार ने होलोकॉस्ट अर्थात् यहूदियों के नरसंहार के दौरान यहूदियों को अपने घर में छिपाया, दूसरों की खातिर सब कुछ जोखिम में डाल दिया।
- जिम और एलिज़ाबेथ इलियट ने एक वंचित जनजाति तक पहुँचने के लिए इक्वेडोर के जंगल में कदम रखा, और अंततः सुसमाचार के लिए अपना जीवन दे दिया।

इनमें से कोई भी व्यक्ति भयरहित नहीं था। किन्तु उनके भीतर परमेश्वर का भय और उसकी योजना के प्रति उत्साह, मनुष्य या मृत्यु के भय से कहीं अधिक था। उन्होंने यीशु के इन शब्दों को समझा: "क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा" (मत्ती 16:25)।

हमारे लिए उपलब्ध सामर्थ्य

वही सामर्थ्य, जिसने विश्वास के इन वीरों को राज्य के लिए बड़े जोखिम उठाने में सक्षम बनाया, आज हमारे लिए भी उपलब्ध है। राजा के पुत्र और पुत्रियाँ होने के नाते, हमें किसी भी बात से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। रोमियों 8:31 हमें स्मरण कराता है, "यदि परमेश् वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?" यशायाह 54:17 यह घोषणा करता है कि जितने हथियार तेरी हानि के लिये बनाए जाएँ, उन में से कोई सफल न होगा। और भजन संहिता 91:1 हमें परमेश्वर की उस रक्षा का आश्वासन देता है जब हम उसकी छाया में वास करते हैं।

इसके अतिरिक्त, हमारे भीतर पवित्र आत्मा का वास है। प्रेरितों 1:8 यह वायदा करता है, "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।" यह सामर्थ्य रूपांतरणकारी है, और हमारे भय पर विजय पाने के लिए पर्याप्त से भी अधिक है।

भय पर विजय पाने के व्यावहारिक तरीके

भय पर विजय पाना एक प्रक्रिया है, परन्तु यहाँ कुछ व्यावहारिक तरीके दिए गए हैं जो आपको विश्वास के साथ आगे बढ़ने में सहायता कर सकते हैं:

- आपके भय को पहचानें: आपको विशेष रूप से किस बात का भय है? अपने भय को नाम दें और उन्हें ज्योति में लाएँ।
- झूठ का सामना सत्य से करें: अक्सर, हमारे भय उन झूठों पर आधारित होते हैं जिन पर हमने विश्वास किया है। इन झूठों का सामना परमेश्वर के वचन की सच्चाई से करें।
- छोटे से आरम्भ करें: आपको सबसे डरावनी बात से ही आरम्भ करने की आवश्यकता नहीं है। विश्वास के छोटे-छोटे कदम उठाएँ और अपनी "साहस की मांसपेशी" का निर्माण करें।
- मिशन को पूरा होते हुए कल्पना करें: सबसे बुरी परिस्थितियों की कल्पना करने के बजाय, यह कल्पना करें कि परमेश्वर आपकी आज्ञाकारिता के माध्यम से सामर्थ्यपूर्वक कार्य कर रहा है।
- अतीत की विश्वासयोग्यता को स्मरण करें: उन समयों को स्मरण करें जब परमेश्वर ने अतीत में आपकी सहायता की थी। यदि उसने पहले ऐसा किया है, तो वह फिर से ऐसा कर सकता है।
- धर्मिकता भरी सलाह लें: ऐसे विश्वासियों के साथ रहें जो विश्वास से भरे हों और जो आपको विश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें।

- साहस के लिए प्रार्थना करें: प्रेरितों के काम 4:29 में, जैसे आरंभिक कलीसिया ने किया, ठीक वैसे ही आप भी परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको उसके लिए साहसपूर्वक बोलने और कार्य करने के लिए अलौकिक धैर्य प्रदान करे।

विरोध की वास्तविकता

क्या इसका अर्थ यह है कि जब हम अन्धकार का सामना करेंगे, तब हमें कभी भी कठिनाई, पराजय या यहाँ तक कि शहादत का सामना नहीं करना पड़ेगा? नहीं। यीशु ने स्पष्ट कहा कि इस संसार में हमें क्लेश होगा (यूहन्ना 16:33)। किन्तु वह इस गंभीर वास्तविकता के साथ एक अद्भुत प्रतिज्ञा देता है: "परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।" जब हम विश्वास में आगे बढ़ते हैं, तो हमें विरोध, उपहास, या यहाँ तक कि सताव का भी सामना करना पड़ सकता है। किन्तु हमें यह प्रतिज्ञा दी गई है कि यीशु हमेशा हमारे साथ रहेगा, हमें प्रत्येक कदम पर वह सामर्थ्य, साहस और दिशा प्रदान करता रहेगा, जिसकी हमें आवश्यकता है। और हमें यह भी आश्वासन दिया गया है कि हमारी विश्वासयोग्यता के लिए अनन्त प्रतिफल हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

मैं आपको सेवकाई में वर्षों तक काम करने के अनुभव से बता सकती हूँ — सुसमाचार के लिए अपना समय देने से बड़ा कोई आनन्द नहीं है। एक भी खोई हुई आत्मा को परमेश्वर के प्रेम से जुड़ते देखना, यह सब कुछ सार्थक बना देता है, चाहे वह असुविधा का कोई भी क्षण हो, कोई भी असहज बातचीत हो या कोई भी आत्मिक युद्ध हो।

कार्य के लिए एक बुलाहट

तो, परमेश्वर आपको अपने राज्य के लिए क्या जोखिम उठाने के लिये बुला रहा है? वह आपको कहाँ साहस दिखाने और विश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिए कह रहा है? शायद वह आपको उस सहकर्मी के साथ सुसमाचार साझा करने के लिए कह रहा हो, जिसके लिए आप प्रार्थना करते आ रहे हैं। शायद यह उस अल्पकालिक मिशन यात्रा के लिए नामांकन करना है जिसके बारे में आप विचार कर रहे हैं। यह उस सेवकाई को आरम्भ करने का समय हो सकता है जो आपके हृदय में जल रही है, या उस बच्चे को गोद लेने या पालने का निर्णय, जिसे एक घर की आवश्यकता है।

जो कुछ भी हो, यह अवश्य जान लें: आपकी आज्ञाकारिता के दूसरे छोर पर यीशु के साथ एक अद्भुत कार्य आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। हाँ, वहाँ भय होंगे जिनका सामना करना है, चुनौतियाँ होंगी जिन्हें परास्त करना है, और पर्वत होंगे जिन्हें चढ़ना है। किन्तु सोचें, उस ऊँचाई से कितना सुंदर दृश्य दिखेगा! स्वर्ग में आप जो खजाने जमा करेंगे! एक दिन आप अपने उद्धारकर्ता से "शाबाश" सुनेंगे!

स्मरण रखें, जब हम विश्वास के साथ आगे बढ़ते हैं तो भय अपनी शक्ति खो देता है। अन्धकार केवल ज्योति की प्रतीक्षा कर रहा है।

चर्चा एवं मनन:

1. कौन से विशेष भय आपको अपने जीवन में परमेश्वर की बुलाहट का पूरी तरह से पालन करने से रोक रहे हैं?
2. आप कैसे आत्मा-प्रेरित छोटे-छोटे विश्वास के कदम उठाकर भय पर विजय पा सकते हैं और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता में बढ़ सकते हैं?
3. वह अंतिम अवसर कौन-सा था जब आपने विश्वास में आगे बढ़ते हुए परमेश्वर की विश्वासयोग्यता का अनुभव किया? वह अनुभव अब आपको कैसे प्रोत्साहित करता है?

प्रार्थना

हे प्रभु, मुझे यह साहस प्रदान कर कि मैं विश्वास में आगे बढ़ सकूँ, और आपकी सामर्थ्य पर भरोसा रखते हुए अपने भय पर विजय पा सकूँ। मेरी सहायता कर कि मैं आत्मा-प्रेरित जोखिम उठा सकूँ, यह जानकर कि मेरी निर्बलता में आपकी सामर्थ्य परिपूर्ण होती है। यीशु के नाम में, आमीन।

3

दुः खी और खोए हुए लोगों तक पहुँचने के व्यावहारिक तरीके

"उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने ऐसा चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।" - मत्ती 5:16

जब हम दु:खी और खोए हुए लोगों के साथ संबंध बनाने के व्यावहारिक पहलुओं में प्रवेश करते हैं, तब यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अपने कार्यों को ठोस ईशविज्ञान-संबंधी समझ में स्थापित करें। हमारी सेवा मात्र तकनीकों या रणनीतियों का एक समूह नहीं है; यह परमेश्वर के हृदय का प्रतिबिब है और इस पृथ्वी पर उसके हाथों और पैरों का विस्तार है।

सेवा का ईशविज्ञान-संबंधी आधार

1. परमेश्वर का स्वरूप (*इमेज़ो डेई*): उत्पत्ति 1:27 हमें बताता है कि सभी मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में सृजे गए हैं। यह मौलिक सत्य यह निर्धारित करना चाहिए कि हम प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे वह किसी भी स्थिति या जीवनशैली में हो, कैसे देखें और उसके साथ कैसे व्यवहार करें। प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह कितना भी टूटा या खोया हुआ हो, उसमें ईश्वरीय छाप है और उसका अपना मूल्य और गरिमा है।

2. महान आदेश: मत्ती 28:19-20 में, यीशु हमें आज्ञा देता है: "इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ" यह कोई सुझाव नहीं है, बल्कि सभी विश्वासियों के लिए एक आज्ञा है। हमारी सेवा इस बुलाहट के प्रति एक प्रत्यक्ष उत्तर है, जो मानवजाति के लिए परमेश्वर की उद्धार योजना में भागीदारी है।

3. मेलमिलाप की सेवा: 2 कुरिन्थियों 5:18-20 हमें "मसीह के राजदूत" के रूप में वर्णित करता है, जिन्हें "मेलमिलाप की सेवा" सौंपी गई है। हमारा कार्य यह है कि हम मसीह का प्रतिनिधित्व करें और परमेश्वर से विमुख संसार को उसके साथ मेलमिलाप करने का संदेश पहुँचाएँ।

4. मसीह की देह: इफिसियों 4:11-16 यह स्पष्ट करता है कि मसीह की देह कैसे कार्य करती है, और कैसे प्रत्येक अंग की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सेवा में हमारे व्यक्तिगत प्रयास कलीसिया के समग्र उद्देश्य में योगदान करते हैं, जो परमेश्वर के राज्य का निर्माण है।

5. आत्मा के फल: गलातियों 5:22-23 में आत्मा के फल सूचीबद्ध किए गए हैं, जो हमारे जीवन में तब प्रकट होने चाहिए जब हम दूसरों के साथ व्यवहार करते हैं। प्रेम, आनन्द, शांति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम, ये सब हमारे व्यवहार में परिलक्षित होने चाहिए।

इस ईशविज्ञान-संबंधी ढाँचे को ध्यान में रखते हुए, आइए हम दु:खी और खोए हुओं तक पहुँचने के व्यावहारिक तरीकों पर चर्चा करें:

1. प्रार्थना: प्रभावी सेवा की नींव

"हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो।" - इफिसियों 6:18

प्रार्थना केवल सेवा का आरंभिक चरण नहीं है; यह उस प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। प्रार्थना के द्वारा हम अपने हृदय को परमेश्वर के हृदय के साथ मिलाते हैं, आत्मिक समझ प्राप्त करते हैं, और उसकी सामर्थ्य को अपने प्रयासों में आमंत्रित करते हैं।

व्यावहारिक अनुप्रयोग:

- अपनी सेवा के प्रयासों के लिए एक प्रार्थना रणनीति विकसित करें।
- एक प्रार्थना कैलेंडर बनाएँ, जिसमें प्रत्येक दिन विशेष व्यक्तियों या समूहों के लिए प्रार्थना की जाए।
- अपने समुदाय में प्रार्थना यात्राएँ आयोजित करें, और परमेश्वर से आवश्यकताओं और अवसरों को प्रकट करने के लिए प्रार्थना करें।

2. सुनने वाला हृदय विकसित करें

"हे मेरे प्रिय भाइयो, यह बात तुम जान लो: हर एक मनुष्य सुनने के लिये तत्पर और बोलने में धीर और क्रोध में धीमा हो।"- याकूब 1:19

सक्रिय रूप से सुनना दूसरों तक पहुँचने का एक सामर्थी संसाधन है। यह सच्ची परवाह को दर्शाता है और गहरे संवाद के द्वार खोलता है।

व्यावहारिक अनुप्रयोग:

- ध्यानपूर्वक सुनने की आदत डालें, जो आपने सुना है उसे दोहराएँ जिससे कि समझ की पुष्टि हो सके।
- खुले प्रश्न पूछें, जो लोगों को अपनी कहानी और विश्वास साझा करने के लिए आमंत्रित करें।
- शीघ्र समाधान देने या तर्क-वितर्क करने की प्रवृत्ति का विरोध करें।

3. अपनी व्यक्तिगत गवाही साझा करें

"पर मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र समझो। जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ।" - 1 पतरस 3:15

आपके जीवन में परमेश्वर के कार्य की कहानी गवाही देने का एक सामर्थी संसाधन है। यह एक अनूठा वृत्तांत है जिसे कोई झुठला नहीं सकता है।

व्यावहारिक अनुप्रयोग:

- अपनी गवाही को एक संक्षिप्त (तीन मिनट) और एक विस्तृत (दस मिनट) दोनों रूपों में लिखें।
- किसी मित्र या परिवार के सदस्य के साथ अपनी गवाही साझा करने का अभ्यास करें।
- स्वाभाविक अवसरों की खोज करें जहाँ आप अपनी कहानी के अंशों को वार्तालाप में शामिल कर सकें।

4. व्यावहारिक आवश्यकताओं को पूरा करें

"यदि कोई भाई या बहिन नंगे-उघाड़े हो और उन्हें प्रतिदिन भोजन की घटी हो, और तुम में से कोई उनसे कहे, "कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो," पर जो वस्तुएँ देह के लिये आवश्यक हैं वह उन्हें न दे तो क्या लाभ?" - याकूब 2:15-16

व्यावहारिक सेवा के माध्यम से परमेश्वर का प्रेम प्रदर्शित करना अक्सर सुसमाचार के लिए हृदयों को खोलता है।

व्यावहारिक अनुप्रयोग:

- अपनी गाड़ी में "अपने पड़ोसी से प्रेम करो" किट रखें जिसमें पानी की बोतलें, नष्ट न होने वाले नाश्ते, और उपहार कार्ड हों।
- उन स्थानीय संस्थाओं के साथ स्वयंसेवी बनें जो कमजोर वर्गों की सेवा करती हैं।

- अपने समुदाय में आवश्यकता की पहचान करें जिसे आप पूरा कर सकते हैं (जैसे, पड़ोसी के लॉन की घास काटना, नई माँ के लिए भोजन उपलब्ध कराना)।

5. सच्चे संबंध का निर्माण करें

"क्योंकि सबसे स्वतंत्र होने पर भी मैं ने अपने आप को सब का दास बना दिया है कि अधिक लोगों को खींच लाऊँ।"- 1 कुरिन्थियों 9:19

प्रभावी सेवा अक्सर सच्चे संबंधों के संदर्भ में होती है। इसके लिए समय, धीरज और दूसरों के जीवन में वास्तविक निवेश की आवश्यकता होती है।

व्यावहारिक अनुप्रयोग:

- नियमित रूप से पड़ोसियों या सहकर्मियों को भोजन के लिए आमंत्रित करें।
- अपनी रुचियों से संबंधित सामुदायिक समूहों या क्लबों में सम्मिलित हों।
- लोगों से संपर्क बनाए रखें और लगातार उनकी देखभाल करते रहें।

6. अपने विशेष वरदानों और उत्साहों का उपयोग करें

"जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों के समान एक दूसरे की सेवा में लगाए।" - 1 पतरस 4:10

परमेश्वर ने आपको विशेष रूप से वरदान दिए हैं। इन वरदानों का उपयोग सेवा में करना आपको सच्चाई और प्रभावशीलता से सेवा करने में सामर्थी बनाता है।

व्यावहारिक अनुप्रयोग:

- अपने आत्मिक वरदानों और स्वाभाविक तोड़ों अर्थात् प्रतिभाओं की पहचान करें।
- विचार करें कि इन वरदानों का सेवा में कैसे उपयोग किया जा सकता है (उदाहरण के लिए, यदि आप संगीत में निपुण हैं, तो वृद्धाश्रम में बजाने पर विचार करें)।
- उन सेवकाई के अवसरों की खोज करें जो आपके उत्साह और कौशल के अनुरूप हों।

7. अन्य लोगों के साथ सहभागिता करें

"एक से दो अच्छे हैं, क्योंकि उनके परिश्रम का अच्छा फल मिलता है।" - सभोपदेशक 4:9

हम इस मिशन में अकेले नहीं बुलाए गए हैं। दूसरों के साथ सहभागिता करना हमारे प्रभाव को बढ़ाता है और आवश्यक समर्थन व उत्तरदायित्व प्रदान करता है।

व्यावहारिक अनुप्रयोग:

- आपकी कलीसिया की सेवा गतिविधियों में शामिल हों।
- अपने क्षेत्र में प्रतिष्ठित मसीही संगठनों के साथ सहभागिता करें।
- एक छोटा समूह बनाएँ जो स्थानीय मिशन और सेवा पर केंद्रित हो।

8. आत्मिक युद्ध में शामिल हों

"क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।" - इफिसियों 6:12

यह पहचानें कि सेवा आत्मिक युद्ध में शामिल होना है। हमें आत्मिक हथियारों से सुसज्जित होना चाहिए और परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर रहना चाहिए।

व्यावहारिक अनुप्रयोग:

- नियमित रूप से परमेश्वर के सारे हथियार धारण करें (इफि. 6:10-18)।
- आत्मिक आक्रमणों को पहचानना और उनका विरोध करना सीखें।
- प्रार्थना योद्धाओं का एक नेटवर्क विकसित करें जो आपकी सेवा में किए गए प्रयासों के लिए प्रार्थना करें।

9. सांस्कृतिक बुद्धिमत्ता का अभ्यास करें

"मैं यहूदियों के लिये यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊँ. . . मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ।" - 1 कुरिन्थियों 9:20, 22

सांस्कृतिक भिन्नताओं को समझना और उनका आदर करना प्रभावी सेवा के लिए आवश्यक है, विशेषकर विविध समुदायों में।

व्यावहारिक अनुप्रयोग:

- उन लोगों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करें जिन तक आप पहुँचना चाहते हैं।
- आपके समुदाय में बोली जाने वाली अन्य भाषाओं में मूल अभिवादन या वाक्यांश सीखें।
- सांस्कृतिक रीति-रिवाजों और प्रथाओं के प्रति संवेदनशील रहें।

10. प्रेम में स्थिर रहें

"प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है. . . वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।" - 1 कुरिन्थियों 13:4, 7

दु:खी और खोए हुओं तक पहुँचना अक्सर एक दीर्घकालिक प्रक्रिया होती है। स्थिरता और निरंतर प्रेम इस कार्य की कुंजी हैं।

व्यावहारिक अनुप्रयोग:

- अपनी चुनी हुई सेवा गतिविधियों में दीर्घकालिक सहभागिता के लिए समर्पित हों।
- जब तत्काल परिणाम न दिखें, तब निराश न हों; परिणामों के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखें।
- स्वयं को नियमित रूप से परमेश्वर के धैर्यपूर्ण प्रेम की याद दिलाएँ।

11. उत्तर देने के लिए तैयार रहें

"पर मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र समझो। जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ।" - 1 पतरस 3:15

यद्यपि हमारे कार्य अक्सर शब्दों से अधिक तेज बोलते हैं, फिर भी हमें अवसर मिलने पर अपने विश्वास को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

व्यावहारिक अनुप्रयोग:

- सामान्य प्रश्नों और आपत्तियों का उत्तर देने के लिए, विश्वास की रक्षा की बुनियादी बातों का अध्ययन करें।
- सुसमाचार सन्देश की एक स्पष्ट, संक्षिप्त व्याख्या विकसित करें।
- आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए, अन्य विश्वासियों के साथ अपने विश्वास को साझा करने का अभ्यास करें।

12. कहानी की सामर्थ्य को अपनाएँ

“ये सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं, और बिना दृष्टान्त वह उनसे कुछ न कहता था।” - मत्ती 13:34

यीशु ने गहन सत्यों को प्रकट करने के लिए अक्सर कहानियों का उपयोग किया। ठीक उसी प्रकार, हम भी कहानियों — चाहे वे बाइबल से हों या हमारे जीवन से — उनका उपयोग कर सकते हैं और दूसरों से जुड़ सकते हैं और परमेश्वर के सत्य को प्रकट कर सकते हैं।

व्यावहारिक अनुप्रयोग:

- बाइबल की प्रमुख कहानियों और उनके अनुप्रयोगों से स्वयं को परिचित करें।
- अपने जीवन से “परमेश्वर के क्षणों” को पहचानना और साझा करना सीखें।
- आत्मिक सिद्धांतों को समझाने के लिए दृष्टांतों और उदाहरणों का उपयोग करें।

प्रिय बहन, यह स्मरण रखें कि खोए हुओं तक पहुँचना सभी सही शब्दों या तकनीकों को जानने के बारे में नहीं है। यह परमेश्वर के प्रेम को एक दु:खी संसार तक आप के माध्यम से बहने देने के बारे में है। जब आप विश्वास में आगे बढ़ती हैं, तो यह विश्वास रखें कि पवित्र आत्मा आपकी अगुवाई करेगा और आपको बोलने के लिए उचित शब्द देगा।

चर्चा एवं मनन:

1. इनमें से कौन-सी व्यावहारिक सलाह आपके साथ सबसे अधिक मेल खाती है? क्यों?
2. इस सप्ताह आप कौन-सा एक कदम उठा सकते हैं जिससे आप किसी ऐसे व्यक्ति के साथ जुड़ सकें जिसे यीशु को जानने की आवश्यकता है?
3. आप अपने परिवार या मसीही मित्रों को अपने सेवा प्रयासों में कैसे शामिल कर सकते हैं?
4. आप बाइबल आधारित ईशविज्ञान की समझ में किस प्रकार वृद्धि कर सकते हैं जिससे आपकी सेवा अधिक प्रभावी हो सके?

प्रार्थना

हे प्रभु, हमें खोए हुओं के लिए अपना हृदय दे। हमारे चारों ओर मौजूद अवसरों के प्रति हमारी आँखें खोलें और हमें विश्वास के साथ आगे बढ़ने का साहस दें। इस अन्धकारमय संसार में हमें अपने प्रेम और सत्य के

वाहक के रूप में उपयोग करें। जब हम दूसरों तक पहुँचने का प्रयास करते हैं तो हमें ज्ञान, बुद्धि और विवेक से सुसज्जित करें। हमारे शब्द और कर्म हमेशा आपकी ओर ही इशारा करें। यीशु के नाम में, आमीन।

4

पत्नियों और माताओं के रूप में एक अनन्त दृष्टिकोण को बनाए रखना

"पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ।" - कुलुस्सियों 3:2

मैं आपसे सच्चाई कहने जा रही हूँ: मसीह यीशु के पीछे चलना, अन्धकारमय और टूटी हुई जगहों में प्रवेश करना, एक पत्नी और माँ के रूप में *कठिन* है। अनगिनत बार ऐसे क्षण आए हैं जब मुझे माँ होने के अपराधबोध से जूझना पड़ा है, अपनी सुरक्षा को लेकर भय की लहरों का सामना करना पड़ा है, और परिवार के साथ समय बिताने साथ ही सेवा कार्य में पूरी तरह शामिल रहने का प्रयास करना भी बहुत कठिन रहा है।

क्या आप इससे सहमत हैं? शायद आप भी इस खिचाव को महसूस करती हैं, एक ओर परमेश्वर के राज्य के लिए कुछ प्रभावकारी करने की चाह, और दूसरी ओर, अपने परिवार से प्रेम करके परमेश्वर की आराधना करने की इच्छा। आप सेवा के लिए अधिक समय की चाहती है, परन्तु माँ होने की 24/7 जिम्मेदारियों के कारण स्वयं को थका हुआ महसूस करती हैं। यह निश्चित रूप से एक संतुलन से भरा हुआ कार्य है।

किन्तु यह वह बात है जो परमेश्वर ने मुझे दिखाई है: यह "या तो यह, या वह" का विषय नहीं है, यह "दोनों व और" का विषय है। हम अपने जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट का अनुसरण कर *सकते हैं*, साथ ही उन अनमोल परिवारों की भली भाँति देख-रेख कर *सकते हैं* जिन्हें उसने हमें सौंपा है। वास्तव में, मैं कहूँगी कि हमें *ऐसा करना ही चाहिए।* क्योंकि संसार की दशा इतनी विकट है कि हम मातृत्व की उस धारणा के कारण निष्क्रिय नहीं रह सकते है जो बाइबल के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती है।

कृपया मेरे हृदय की बात सुनें: मैं हमारे बच्चों और घरों में अपना सब कुछ उंडेलने के कारण उच्च बुलाहट को बिल्कुल भी कम नहीं आँक रही हूँ। यह परमेश्वर के राज्य में किए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण निवेशों में से एक है, और इसके लिए अत्याधिक मात्रा में प्रार्थना, प्रेम और सुनियोजिता की आवश्यकता होती है।

किन्तु क्या हो यदि हम मातृत्व के पवित्र कार्य को सेवा के पवित्र कार्य से अलग देखने के बजाय उन्हें सुंदर रूप से एक-दूसरे से जुड़ा हुआ समझें? क्या हो यदि हम यह पहचानें कि हमारे द्वारा किया गया सबसे सामर्थी सुसमाचार प्रचार और शिष्यत्व हमारे अपने रसोईघर की मेज़ पर ही होता है? जब हम अपने बच्चों के सामने

यह उदाहरण रखते हैं कि यीशु से प्रेम करना और यीशु के समान प्रेम करना कैसा होता है, तब हम ऐसे तीरों का निर्माण कर रहे होते हैं जिन्हें परमेश्वर की महिमा के लिए संस्कृति की ओर छोड़ा जाएगा।

इस प्रकार की सोच का परिवर्तन मेरे लिए क्रांतिकारी रहा है। अचानक, मातृत्व के प्रतिदिन के कार्यों को अनन्त महत्व मिल गया है। जब मैं डायपर बदल रही होती हूँ, तब मैं अपने बच्चों के लिए प्रार्थना करती हूँ कि वे यीशु के लिए संसार को बदलने वाले बनें। जब मैं उन्हें स्कूल ले जा रही होती हूँ, तब हम बाइबल वचन को कंठस्थ करते हैं और इस पर बात करते हैं कि उनके सहपाठियों के साथ यीशु का प्रेम कैसे बाँटना है। जब मैं उन्हें रात में सुला रही होती हूँ, तब मैं उनके जीवनों पर बाइबल की सच्चाई और आशीष का प्रचार करती हूँ।

और क्या आप जानते हैं? मेरे बच्चे इस दर्शन को पकड़ रहे हैं! उन्हें स्कारलेट होप की स्त्रियों के लिए हाइजीन बैग भरने में बहुत खुशी होती है। वे खोए हुओं के लिए साहस के साथ प्रार्थनाएँ करती हैं। वे दुःखी और गरीब लोगों की देखभाल के महत्व के बारे में बात करती हैं। और यद्यपि कभी -कभी सेवकाई के कारण में उनसे दूर रहती हूँ, फिर भी वे जानती हैं कि यह परमेश्वर के राज्य की उन्नति के लिए है।

यहाँ कुछ व्यावहारिक तरीके दिए गए हैं जिनके द्वारा हम पत्नियों और माताओं के रूप में अनन्त दृष्टिकोण को बनाए रखते हुए राज्य के कार्य में सहभागी हो सकती हैं:

1. अनन्तता की ज्योति में सफलता की परिभाषा पुनः निर्धारित करें

संसार सफलता की अपनी परिभाषा तय करता है और उसमें फँसना आसान है। एक माँ के रूप में, हम अक्सर यह दबाव महसूस करती हैं कि हमारा घर चमचमाता रहे, हमारे बच्चे पूर्ण रूप से अनुशासित हों, और हमारा जीवन इंस्टाग्राम जैसा दिखे। किन्तु परमेश्वर सफलता को उस दृष्टिकोण से नहीं देखता है। वह हमारी विश्वासयोग्यता, हमारे हृदयों, और उन अनन्त बातों में निवेश करने की हमारी इच्छा को देखता है जो वास्तव में महत्वपूर्ण हैं।

जब हम सफलता को अनन्तता की दृष्टि से पुनः परिभाषित करते हैं, तब हम स्वयं को अव्यावहारिक अपेक्षाओं से मुक्त कर देते हैं। सफलता का अर्थ यह नहीं है कि हमारे पास सब कुछ व्यवस्थित हो, या कि हम अपनी सूचियों के सभी कार्य पूरे कर लें। इसका अर्थ है कि हम अपने जीवन में परमेश्वर की बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें और शेष बातों के लिए उस पर भरोसा रखें।

मत्ती 6:33 में यीशु हमें स्मरण दिलाता है: “इसलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।” जब हमारी प्राथमिकताएँ उसके अनुसार सुसंगत होती हैं, तब हम उस पर भरोसा कर सकते हैं कि वह हमारे आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा — हमारे घरों में भी और हमारी सेवकाइयों में भी।

2. अपनी सेवकाई में अपने बच्चों को शामिल करें

पत्नियों और माताओं के रूप में अनन्त दृष्टिकोण बनाए रखने के सबसे सुंदर तरीकों में से एक है कि अपनी सेवकाई में अपने बच्चों को शामिल करना। यह न केवल उन्हें खोए हुओं के लिए एक हृदय विकसित करने में सहायता करता है, बल्कि यह हमारे परिवारों में गुणवत्तापूर्ण समय बिताने के अवसर भी उत्पन्न करता है।

जब मेरे बच्चे स्कारलेट होप की स्त्रियों के लिए हाइजीन बैग भरने में सहायता करते हैं, तब वे प्रत्यक्ष रूप से सीखते हैं कि दूसरों की सेवा करना क्या होता है। जब वे खोए हुओं के लिए साहस के साथ प्रार्थनाएँ करते हैं, तब वे मध्यस्थता की सामर्थ्य को समझने लगते हैं। और जब वे सुनते हैं कि हमारी सेवकाई के द्वारा जीवन कैसे परिवर्तित हो रहे हैं, तब वे परमेश्वर के राज्य की उन्नति के लिए दर्शन को थामते हैं।

बच्चे सेवा में सहभागी होने के लिए बहुत छोटे नहीं हैं। वास्तव में, नीतिवचन 22:6 हमें प्रोत्साहित करता है, "लड़के को उसी मार्ग की शिक्षा दे जिसमें उसको चलना चाहिए, और वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा।" जब हम अपने बच्चों को आरम्भ से ही सेवकाई में शामिल करते हैं, तब हम उन्हें भविष्य के अगुवे, शिष्य और संसार-परिवर्तक बना रहे होते हैं।

सेवकाई में बच्चों को शामिल करने के व्यावहारिक सुझाव:

- आदर्श सेवा: अपने बच्चों को यह देखने दें कि आप दूसरों की सेवा कर रहे हैं। चाहे वह ज़रूरतमंद परिवार के लिए भोजन बनाना हो या किसी पड़ोसी की सहायता करना हो, आपके कार्य बहुत कुछ बोलते हैं।
- उन्हें प्रार्थना में आमंत्रित करें: उस व्यक्ति या समूह के लिए परिवार के रूप में एक साथ प्रार्थना करें जिसकी आप सेवा कर रहे हैं। अपने बच्चों को अपने मित्रों और पड़ोसियों के लिए प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- बच्चों के लिए उपयुक्त सेवा के अवसर बनाएँ: ऐसे तरीके खोजें जिनमें आपके बच्चे अपनी उम्र के अनुसार सेवा कर सकें। वे खाने के बैग भरने में सहायता कर सकते हैं, प्रोत्साहन भरे सन्देश लिख सकते हैं, या सामुदायिक सफाई अभियानों में भाग ले सकते हैं।

3. अपने वैवाहिक जीवन को प्राथमिकता दें

एक सुदृढ़, मसीह-केंद्रित विवाह पारिवारिक जीवन और सेवकाई दोनों के लिए आधार प्रदान करता है। जब हमारा वैवाहिक जीवन स्वस्थ होता है, तो यह हमारे आस-पास के संसार को परमेश्वर के प्रेम का संदेश देता है। किन्तु सेवा और मातृत्व के बीच संतुलन बिठाने के प्रयास में, हम अक्सर अपने जीवनसाथी को अनेदखा कर देते हैं।

इफिसियों 5:33 कहता है, "पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने।" यह बाइबल आधारित आज्ञा हमें स्मरण दिलाती है कि हमारे वैवाहिक जीवन में आपसी प्रेम, सम्मान और आदर होना चाहिए। जब हम अपने परिवारों की सेवा करते हैं और सेवकाई में लगे रहते हैं, तब हमें अपने जीवनसाथी के साथ समय बिताने को प्राथमिकता देने के बारे में सचेत रहना चाहिए।

अपने वैवाहिक जीवन को प्राथमिकता देने के व्यावहारिक सुझाव:

- नियमित डेट नाइट्स: प्रत्येक सप्ताह एक समय निर्धारित करें जिसमें आप डेट नाइट के लिए समय निकालें, भले ही वह बच्चों के सो जाने के बाद घर पर ही क्यों न हो। एक साथ बिताया गया यह समय आपके संबंध को सुदृढ़ करेगा और आप दोनों को एक-दूसरे से जोड़े रखेगा।
- खुला संवाद: अपने जीवनसाथी के साथ इस बारे में खुलकर बात करें कि आप सेवकाई और पारिवारिक जीवन के संतुलन में किन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। अपने भय, निराशाएँ और आशाएँ साझा करें, और एक-दूसरे को सहायता देने के लिए जानबूझकर प्रयास करें।
- एक साथ प्रार्थना करें: प्रार्थना आपके वैवाहिक जीवन को सशक्त बनाने के सबसे सामर्थी तरीकों में से एक है। एक-दूसरे के लिए, अपने बच्चों के लिए, और उस सेवकाई के लिए जिसमें आप शामिल हैं, प्रार्थना करें।

4. अपने समय का प्रबंधन करें और कुछ अतिरिक्त समय निकालें

परिवार और सेवकाई के बीच संतुलन बनाने की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक समय का प्रबंधन करना है। स्कूल ले जाना-ले आना, कार्य, घरेलू काम, और सेवकाई, इन सब के बीच दिन अत्यंत बोझिल लग सकते हैं। किन्तु परमेश्वर हमें बुलाता है कि हम उस समय के साथ बुद्धिमानी से जिएँ, जिसे उसने हमें दिया है।

इफिसियों 5:15-16 कहता है, "इसलिये ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो: निर्बुद्धियों के समान नहीं पर बुद्धिमानों के समान चलो। अवसर को बहुमूल्य समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं।" समय हमारे सबसे मूल्यवान संसाधनों में से एक है, और इसका उद्देश्यपूर्ण उपयोग करना आवश्यक है।

अपने कार्यक्रम में कुछ समय बचाना आवश्यक है। यदि हर पल पहले से ही व्यस्त हो, तो आकस्मिक सेवकाई के अवसरों या परिवार के साथ गुणवत्ता समय के लिए कोई स्थान नहीं रहेगा। जब हम जानबूझकर अपने कार्यक्रम में कुछ समय खाली रखते हैं, तब हम परमेश्वर को अप्रत्याशित तरीकों से कार्य करने की अनुमति देते हैं।

अपने समय के प्रबंधन के व्यावहारिक सुझाव:

- समय का निर्धारण: परिवार, सेवा, और विश्राम के लिए विशिष्ट समय निर्धारित करें। इससे यह सुनिश्चित होता है कि आपके जीवन का कोई भी क्षेत्र उपेक्षित न हो।
- ना कहना सीखें: आप सब कुछ नहीं कर सकते हैं। यह प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपको विवेक दे कि किन अवसरों को अपनाना है और किन्हें अस्वीकार करना है। अच्छी बातों को ना कहने का अर्थ है कि श्रेष्ठ बातों को हाँ कहना।
- सब्त के दिन का विश्राम: सब्त के दिन विश्राम को अपने जीवन में प्राथमिकता बनाएँ। इस समय का उपयोग शारीरिक, भावनात्मक, और आत्मिक रूप से पुनः ऊर्जा प्राप्त करने के लिए करें।

प्रिय बहन, स्मरण रखें कि आपकी प्राथमिक सेवकाई आपके परिवार के प्रति है। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि यही आपकी एकमात्र सेवकाई है। जब आप परमेश्वर की बुद्धि और अगुवाई की खोज करती हैं, तब वह आपको दिखाएगा कि पत्नी, माता, और सुसमाचार के लिए श्रमिक के रूप में अपने विभिन्न उत्तरदायित्वों में कैसे संतुलन स्थापित करना है।

निश्चित ही, इसके लिए हमें लगातार अपने समय और कार्यक्रम को प्रभु को समर्पित करते रहना होगा: उससे पूछना होगा कि प्रत्येक समय में किन बातों को “हाँ” और किन बातों को “ना” कहना है; जब हम घर पर हों तो पूरी तरह से उपस्थित और व्यस्त रहना होगा, और अपने परिवारों को पुनः ऊर्जावान बनाने और उनका आनन्द लेने के लिए नियमित आराम को प्राथमिकता देनी होगी।

किन्तु इन सब बातों से बढ़कर, यह आवश्यक है कि हम एक अनन्त दृष्टिकोण को हमेशा अपने सामने रखें। यह आवश्यक है कि हम स्मरण रखें कि यह जीवन केवल एक भाप के समान है (याकूब 4:14), और हमारे पास यीशु के लिए परिवर्तनकारी कार्य करने के लिए बहुत ही अल्प समय है। आत्माएँ दाँव पर हैं, और सुसमाचार के लिए जो बलिदान हम देते हैं, वे अनन्तकाल तक गूंजते रहेंगे।

एक दिन, हम परमेश्वर के सिहासन के सामने खड़े होंगे और यह लेखा देंगे कि हमने अपना जीवन कैसे व्यतीत किया (2 कुरिन्थियों 5:10)। उस दिन, मैं परमेश्वर से यह सुनना चाहती हूँ: “धन्य, हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, जो कुछ मैंने तुझे दिया — तेरा समय, धन, कौशल, और परिवार — सब मेरी महिमा और खोए हुओं के उद्धार के लिए उड़ेल दिया। अपने पिता के आनन्द में प्रवेश कर!”

चर्चा एवं मनन:

1. आपने पत्नी/माता के रूप में अपनी भूमिका और सेवकाई में शामिल होने की अपनी इच्छा के बीच किन तरीकों से तनाव महसूस किया है?

2. आप अपने बच्चों को सेवा कार्य में और अधिक सक्रिय रूप से कैसे शामिल कर सकती हैं?

3. आपके जीवन का वह कौन-सा क्षेत्र है जिसमें आपको परमेश्वर की योजनाओं के लिए उपलब्ध रहने के लिए अधिक समय निकालने की आवश्यकता है?

प्रार्थना

हे प्रभु, हमारी सहायता कर कि हम पत्नी और माता की अपनी भूमिकाओं को तेरी दृष्टि से देखें। हमें यह दिखा कि अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों और खोए हुओं तक पहुँचने की तेरी बुलाहट के बीच कैसे संतुलन स्थापित करें। हमें वह बुद्धि दें कि हम अपने घरों में और अपने चारों ओर के संसार में अनन्त निवेश कर सकें, और ऐसे मार्ग दिखा, जिसमें हम अन्धकार का सामना करके मसीह की ज्योति को एक टूटे हुए संसार में पहुँचा सकें। यीशु के नाम में, आमीन।

निष्कर्ष

जब हम इस यात्रा के अंत में पहुँचते हैं, मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहती हूँ कि आपने इस क्षेत्र मार्गदर्शिका में जो कुछ सीखा है, उस पर मनन करें। हमारे संसार में व्याप्त अन्धकार अक्सर भारी प्रतीत होता है, और कई बार इसका सामना करने की बुलाहट हमारी सामर्थ से अधिक लग सकती है। किन्तु स्मरण रखें, परमेश्वर ने हमें असहाय नहीं छोड़ा है।

उसने हमें अपना आत्मा दिया है जो हमें सामर्थ्य प्रदान करता है, अपना वचन दिया है जो हमारा मार्गदर्शन करता है, और अपनी कलीसिया दी है जो हमारे साथ चलती है। हमें कभी भी अकेले अन्धकार का सामना करने के लिए नहीं बुलाया गया है। हम मसीह की ज्योति के साथ चलते हैं, और वह ज्योति कभी बुझ नहीं सकती है।

यूहन्ना 1:5 कहता है, "ज्योति अन्धकार में चमकती है, और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया।" यही वह प्रतिज्ञा है जिससे हम चिपके रहते हैं। चाहे संसार कितना भी अन्धकारमय क्यों न लगे, चाहे हमें जिन लोगों से सामना हो वे कितने भी टूटे हुए क्यों न हों, मसीह की ज्योति उससे कहीं अधिक सामर्थी है। वह निराश लोगों को आशा देती है, घायल हृदयों को चंगा करती है, और खोए हुओं को उद्धार प्रदान करती है।

क्या आप अन्धकार में प्रवेश करेंगे?

तो, प्रिय बहन, क्या आप अन्धकार में प्रवेश करेंगी? क्या आप परमेश्वर पर भरोसा रखेंगी, उन भयों और अनिश्चितताओं के साथ जो आपको रोकते हैं? क्या आप अपने समय, अपने वरदानों और अपने हृदय को उसकी मिशन के लिए समर्पित करेंगी?

आपके लिए जो साहसिक यात्रा प्रतीक्षा कर रही है, वह आपकी कल्पना से परे है। हाँ, वहाँ चुनौतियाँ होंगी। हाँ, संदेह के क्षण आएँगे। किन्तु वहाँ कुछ ऐसे अद्भुत पल भी होंगे — जब आप देखेंगे कि परमेश्वर किसी जीवन को रूपांतरित कर रहा है, जब आप गवाह बनेंगी कि एक खोई हुई आत्मा घर लौट रही है; जब आप यह आनन्द अनुभव करेंगी कि परमेश्वर ने आपका उपयोग अनन्त प्रभाव डालने के लिए किया है।

यीशु हमें अपने पीछे चलने के लिए बुलाता हैं, और यह अक्सर असुविधाजनक स्थानों में चलने, अपनी प्रतिष्ठा को जोखिम में डालने, और दूसरों के लिए अपना जीवन देना होता है। किन्तु जब हम ऐसा करते हैं,

तब हम पाते हैं कि हम अकेले नहीं हैं। वह हमारे साथ हर कदम पर चलता है, हमें सामर्थ्य देता है, हमारी रक्षा करता है, और हमें अपनी अटल शांति से भरता है।

भविष्य के लिए एक दर्शन: अगली पीढ़ी का निर्माण

पत्नी और माता के रूप में, हमारे पास अगली पीढ़ी के संसार-परिवर्तकों को पालने का अद्भुत सौभाग्य है। हमारे बच्चे हमें देख रहे हैं। वे देखते हैं कि हम कैसे सेवा करते हैं, कैसे प्रेम करते हैं, और कैसे अपने जीवनों के लिए भरोसा परमेश्वर पर रखते हैं। जैसे-जैसे वे बढ़ते हैं, वे हमसे जो कुछ सीखते हैं उसे अपनाएँगे और मसीह की ज्योति को अपने स्वयं के मिशन क्षेत्रों में ले जाएँगे।

नीतिवचन 31:28 कहता है कि उसके पुत्र उठ उठकर उसको धन्य कहते हैं। इससे बड़ी आशीष और क्या हो सकती है कि हम अपने बच्चों को सत्य में चलते हुए देखें, सुसमाचार को जीते हुए देखें, और मसीह की ज्योति को इस संसार के अन्धकारमय स्थानों में चमकाते हुए देखें?

आइए, हम संकल्प लें कि हम अपने बच्चों का पालन -पोषण एक अनन्त दृष्टिकोण के साथ करें। आइए हम उन्हें सिखाएँ कि वे उस बात को महत्व दें जिसे परमेश्वर महत्त्व देता है। आइए हम उन्हें यह दिखाएँ कि राज्य के लिए जिया गया जीवन ही सबसे ज्यादा संतुष्टि से भरा जीवन है।

तो यह आपकी चुनौती है: वह स्थान कौन-सा है जहाँ परमेश्वर आपको अपनी ज्योति चमकाने के लिए बुला रहा है? उसकी ज्योति को चमकाएँ ताकि संसार देखे!

THE MENTORING PROJECT

रेचेल स्टार (Rachelle Starr) स्कारलेट होप की संस्थापक और अध्यक्ष हैं, जो वयस्कों के मनोरंजन से सम्बन्धित व्यवसाय में काम करने वाली महिलाओं के साथ आशा और यीशु के प्रेम को बाँटने वाली एक राष्ट्रीय मसीही संस्था है। रेचेल, मसीह की ज्योति से अंधकार का सामना करने के जुनून की जोशीली समर्थक हैं, और वे सुसमाचार के लिये साहस के साथ जीवन जीने के लिये औरों को प्रोत्साहित करती हैं। वे *आउट्रैजस ओबीडीअन्स* () की लेखिका भी हैं, जिसमें उन्होंने अपने विश्वास और परमेश्वर की बुलाहट के प्रति उग्र आज्ञाकारिता की अपनी जीवन यात्रा के बारे में साझा किया है।